पत्रकारिता और साहित्य

डॉ. जितेन्द्र जे.वनजारा
अध्यापक,
पीटीसी कोलेज, आणंद

१. प्रस्तावना

पत्रकारिता ने साहित्य, समाज एवं देश को एक नई दिशा प्रदान करने का कार्य किया है । जैसे स्वतंत्रता से पूर्व साहित्यकारों ने इसी पत्र-पत्रिकाओं का प्रयोग जनता में देश के प्रति प्रेम एवं जाति-भेद आदि के संदेश के लिए तथा स्वाधीनता संग्राम के समय अस्त्र और शस्त्र के रूप में किया । समाज के विचारों एवं साहित्य की संवाहिका के रूप में भी पत्रकारिता को जाना जाता है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि जो ग्रंथों में समाहित साहित्य से नहीं हो सका वह पत्र-पत्रिकाओं के साहित्य ने साकार कर दिया है ।

२.पत्रकारिता और साहित्य

पत्रकारिता का अंग्रेजी रूपान्तर जर्नलिज्म (Journalism) है । जर्नलिज्म शब्द की उत्पत्ति जर्नल (Journal) से हुई है । हिन्दी में जर्नल को दैनिकी और दैनन्दिनी की संज्ञा दी गई है । इस तरह पत्रकारिता के संदर्भ में इसका अर्थ 'पत्र', 'अखबार' तथा दैनिक होता है ।

जर्नल को व्याप्त करनेवाला शब्द जर्नलिज्म बहुआयामी है । लेखन, संपादन, संकलन तथा इनसे संबंध रखनेवाले सकार्यो को पत्रकारिता के अंतर्गत समाविष्ट किया जा सकता है ।

श्री मोट कहते हैं कि ''समाचारों तथा विचारों का प्रकाशन ही पत्रकारिता है । सामयिक घटनाओं, सूचनाओं तथा परामर्शो के लेखक पत्रकारिता के माध्यम से मानव क्रिया-कलापों के नाटक की प्रतिच्छाया को जनता की माँग के अनुसार प्रकाशित करते हैं । इस प्रकार पत्रकारिता को विशेष उत्तरदायित्वों के साथ व्यवसायिक सेवा के भी अवसर प्राप्त हैं । निष्पक्ष तथा बुद्धिमत्तापूर्ण पत्रकारिता रचनात्मक सेवा के सबसे अधिक प्रभावशाली साधनों में से एक है । पत्रकारिता एक विशाल शैक्षणिक संस्था के रूप में प्रकट होती है । उसमें एक ओर जहाँ मार्गदर्शन करने की शक्ति है, वहाँ दूसरी ओर जन-सेवा की भावना भी । अर्थात् यह नेतृत्व भी करती है, क्योंकि यह जन-भावनाओं को उभार कर लाखों नर-नारियों के विचारों तथा आदर्शो को सन्तुलित भाषा में अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है और साथ ही, इसका दूसरा रूप सेवक का है । पत्र-पत्रिका का चन्दा अथवा मूल्य लेकर नियमित समाचार तथा विचार देने की क्रिया में सेवक का रूप प्रकट होता है ।''

पत्रकारिता के अंतर्गत समाचार पत्र एवं विविध कालिक पत्रिकाओं के संपादन एवं लेखन तथा तत्संबंधी कार्यो को समाविष्ट किया जा सकता है । चैम्बर तथा न्यू वेब्स्टर्स शब्दकोश के अनुसार, ''प्रकाशन, संपादन, लेखन एवं प्रसारणयुक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय ही पत्रकारिता है । पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है । इसका कार्य जनता तथा जन-नेताओं के समक्ष लोक-कल्याण संबंधी कार्यो की सूची प्रस्तुत करना है ।''

डॉ. अर्जुन तिवारी का पत्रकारिता के संदर्भ में कहना है कि– ''समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं । गीता में जगह–जगह 'शुभ दृष्टि' का प्रयोग है । यह 'शुभ दृष्टि' ही पत्रकारिता है, जिसमें गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मलित है । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तो इसमें 'सम दृष्टि' को महत्व देते थे । समाज हित में सम्यक प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जाता है । असत्व, अशिव और असुन्दर पर 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की शंख ध्वनि ही पत्रकारिता है ।''

इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि साहित्य जगत के पत्रों में प्रकाशित समाचार तथा विचार तो पूर्ण रूप से हमारे विषय से संबंध है ही, इसके अतिरिक्त हिन्दी पत्रों में प्रकाशित अन्य सामग्री भी किसी न किसी दृष्टि से भाषा तथा साहित्य के विकास में सार्थक हुई है ।

पत्र–पत्रिकाएँ हंमेशा साहित्य की विधाओं की जन्मदात्री रही है । साहित्य एवं पत्रकारिता के संबंध में विशेष जानकारी से पहले साहित्य के बारे में जान लेना जरूरी है ।

साहित्य के संदर्भ में महाकवि गेटे ने कहा है कि– ''लिटरेचर इज़ दि ह्यूमिनाईजेशन आफ दि वर्ल्ड'' अर्थात् साहित्य अखिल विश्व का मानवीकरण है ।'' मानव जहाँ जहाँ है, वहाँ साहित्य भी किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान है । साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है । अर्थात् समाज में जो भी होता है, साहित्य में दर्पण के समान स्पष्ट प्रतिबिंबित होता है । घटनाओं एवं परिस्थितियों को साहित्य इस प्रकार लिपिबद्ध करके प्रस्तुत करता है जिससे आनंदानुभूति के साथ–साथ आदर्श की स्थापना भी होती है ।

'साहित्य' शब्द धातुगत अर्थ में 'सहित' में अकार के साथ 'य' प्रत्यय लगने से बना है । साहित्य के संदर्भ में आचार्य भामह ने अपने 'काव्यलंकार' में कहा है : ''साहित्यस्य भावः साहित्यम्'' अर्थात् जिसमें सहित का, मिलने का भाव हो, उसे साहित्य कहा जाता हैं ।

भामह ने 'सहित' का भाव स्पष्ट करते हुए लिखा है– 'शब्दार्थो सहितो काव्यम्' अर्थात् जिसमें शब्द और अर्थ का सामंजस्य हो । इस प्रकार कहा जा सकता है कि शब्दों के बिना तो कोई रूप ही नहीं बनता और बिना अर्थ वाले शब्द का कोई मूल्य नहीं ।

डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय साहित्य के विषय में लिखते हैं : ''भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने विविध प्रकार से साहित्य की परिभाषा देने की चेष्टा की है । सामान्यतः 'साहित्य' शब्द का तीन अर्थो में प्रयोग होता है । प्रथम अर्थ के अंतर्गत मानव जाति के संचित ज्ञान–विज्ञान से संबंधित समस्त ग्रंथ समूह को ही साहित्य की संज्ञा प्रदान की जाती है । यह साहित्य शब्द का शिथिल प्रयोग है । द्वितीय अर्थ के अनुसार, अलंकार आदि से संबंधित शास्त्रीय ग्रंथ ही 'साहित्य' की उपाधि से विभूषित कर दिये जाते हैं । सामान्यतः हम साहित्य शब्द का प्रयोग शब्दार्थ और शब्द–गौरव से युक्त ललित साहित्य अर्थात् काव्य, नाटक, कहानी, निबंध आदि के लिये ही करते हैं ।''

इस प्रकार कह सकते है कि पत्रकारिता उस साहित्य की देन है जिसमें काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा–वृत्तांत, गद्यगीत, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, डायरी, आलोचना, समालोचना, समीक्षा, पत्र–साहित्य, आदि विधाओं का समावेश होता है । साहित्य और पत्रकारिता सहोदर है

। एक के बगैर दूसरे का बचना मुश्किल होगा । साहित्य और पत्रकारिता हिन्दी में तो एक दूसरे के सहारे ही विकसित होते रहे हैं ।

साहित्य एक हृदय से निकली हुई ऐसी झंकार है जो अन्य हृदयों को भी झंकृत कर हर्ष की हिलारों से भरकर मग्न कर देती है । इस प्रक्रिया का कार्य पत्रकारिता ही करती है । 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की उदार भावना को लेकर साहित्य जिस प्रकार चलता है, ठीक उसी प्रकार पत्रकारिता भी मानव-कल्याण का ही कार्य करती है । जैसे साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है तो पत्रकारिता को उस समाज की प्रतिकृति । साहित्य और पत्रकारिता के संबंध पर प्रकाश डालते हुए श्री मोटट लिखते हैं : 'लिटरेचर इज दि मिरर ऑफ लाइफ एन्ड जर्नलिज्म रिफ्लेक्ट्स इट' अर्थात् साहित्य जीवन का दर्पण है और पत्रकारिता उसे प्रतिबिंबित करती है । पत्र-पत्रिकाएँ समाज से निर्मित होकर समाज का ही पोषण करती है ।

साहित्यिक पत्रकारिता में साहित्य की बुनियादी समझ हो यह तो अनिवार्य ही है । पत्रकारिता साहित्य के नए रूप, नये आन्दोलनों को रेखांकित तो करती ही है, लेकिन किसी की कभी पक्षधर नहीं होगी । साथ ही साथ उसे इस बात का ध्यान भी रखना होगा कि साहित्य केवल अक्षरों से या कल्पना की वायवी दुनियाँ से सम्बन्धित न हो, बल्कि उसे समाज से, जनता से अपरिहार्यतः जुडे हुए रहना होगा । पत्रकारिता की उत्पत्ति एक सामाजिक उत्पत्ति है । अपने निर्माण और विकास के लिए वह जो जो सामग्री प्राप्त करता है, वह सारी मूलतः समाज की ही देन है । इस प्रकार पत्रकारिता का हमेशा यही प्रयास रहे कि वह सामाजिक चेतना को बनाये रखे । साथ ही साहित्य और समाज के मध्य की कड़ी बने ।

पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा ही हिन्दी जगत या हिन्दी भाषा एवं अन्य भाषा के साहित्यकार प्राप्त हुए हैं । जैसे सरस्वती ने हिन्दी की जो सेवा की है उसे कैसे भुलाया जा सकता है । सदृश पत्रकार पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भारतीय जनता की विचाराभिव्यक्ति, बौद्धिक विकास एवं चेतना हेतु सुदृढ़, व्यवस्थित तथा परिमार्जित भाषा का निर्माण कर साहित्य का सृजन किया । यदि द्विवेदी न होते तो रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शंकर शर्मा, मैथिलीशरण गुप्त, गोपालशरण सिंह, मुकुटधर पाण्डेय और वृंदावनलाल वर्मा जैसे अनेक साहित्यकार शायद ही प्राप्त होते ।

इस प्रकार आत्मकथा, पत्र, रिपोर्ताज जैसी अनेक क्रियाएँ आज पत्रों के माध्यम से ही विकसीत हो रही हैं । साथ ही नयी कहानी, नयी कविता, अकविता और अकहानी लेखन का दौर पत्रों के द्वारा ही प्रचलित हुआ है।

विष्णु नारायण भार्गव ने ''माधुरी'' मासिक पत्रिका का प्रकाशन नवलकिशोर प्रेस से किया । भार्गवजी ने इस पत्रिका में विशिष्ट साहित्यकारों की वृत्तियों का प्रकाशन कर हिन्दी भाषा और साहित्य को बहुत समृद्ध किया । जैसे शिव पूजन सहाय, निराला, इलाचन्द्र जोशी, प्रेमचन्द, रूपनारायण पाण्डेय एवं अन्य साहित्यकारों ने भी इस प्रेस के द्वारा अपने विशिष्ट ग्रंथो को प्रकाशित कराकर हिन्दी साहित्य में अपना स्थान बनाया ।

महात्मा गांधीजीने भी पत्रकारिता के लेखन का कार्य किया । पत्रकारिता गांधीजी के लिए भारत की सेवा थी । उन्होंने गुजराती में 'नवजीवन' और हिन्दी में 'हिन्दी नवजीवन' नामक अपना लेखन कार्य प्रस्तुत किया । जैसे 'नवजीवन' में ऐसे कई लेख लिखे जो स्त्रियों को उनकी अंतःशक्ति का परिचय करा देने वाले थे । साथ ही

'हरिजन सेवक' के नाम से साप्ताहिक भी शुरु किया था । १९३०-३२ के आसपास जैसे इन पत्रिकाओं में केवल गांधीजी ही लिखा करते थे । इस प्रकार पत्रकारिता ने सिर्फ साहित्य को ही नहीं बल्कि हिन्दी भाषा के परिष्कार, स्वाधीनता संग्राम के मुकाम तक पहुँचाने में एक अस्त्र-शस्त्र के रूप में एवं देश के विकास के लिए तथा समाज के मार्गदर्शन के रूप में अपनी भूमिका निभाई है । साहित्य ने जिस प्रकार पत्रकारिता को गंभीरता प्रदान की है, ठीक उसी प्रकार पत्रकारिता ने भी साहित्य और साहित्यकारों को लोकप्रियता की ऊँचाई तक पहुँचाया है ।

अंत में इस प्रकार कहा जा सकता है कि साहित्यिक पत्रिकाओं ने हिन्दी साहित्य के भंडार को भरने में काफी सहयोग दिया है । वर्तमान समय में विशेषतः देखा जाए तो कुछ ही लोग साहित्यिक पत्रिकाओं को पढ़ने में खास दिलचस्पी रखते हैं । वह तो फिल्मी पत्रिकाएँ और चुलबुले साहित्य को अधिक पढ़ना पसन्द करता है । अर्थात् इस प्रकार की पत्रिकाएँ सामान्यतः साहित्यिक पत्रिकाओं के स्तर को गिरा रहे हैं ।

संदर्भसूची

१. पंत, एन.सी. (२००२). हिन्दी पत्रकारिता का विकास, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण
२. शर्मा, राम अवतार (२०००). हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य (प्रथम खण्ड), नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.
३. शाहा, मु. ब. (१९९८). पत्रकारिता और साहित्य, विद्या प्रकाशन, कानपुर-६, प्र.सं.